पर्वत प्रदेश
दत्त कार्य

प्रश्न १.`पल-पल परिवर्तित प्रकृति -वेश `से कवि का क्या तातपर्य है ?
उत्तर :`पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश` का शाब्दिक अर्थ है -प्रकृति हर पल अपना रूप बदल रही है । प्रस्तुत कविता में वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के हर पल परिवर्तित हो रहे परिवेश का चित्रण किया गया है । कभी पर्वत फूल रुपी आँखों के माध्यम से नीचे तालाब में अपना रूप निहारते हैं,तो कभी झरने पर्वत का गौरवगान करते हैं ।पर्वत पर उगे पेड़ों की तुलना उच्चाकांक्षाओं से की गई है । कभी पर्वत बादलों के पीछे छिप जाते हैं,तो कभी शाल के वृक्ष धरती में धंस गए प्रतीत होते हैं । दृश्य तेजी से बदलते रहते हैं।

प्रश्न २.बादलों के पंख लगाकर कौन उड़ गया और कैसे ?
उत्तर :पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में दृश्य तेजी से बदल जाते हैं । कभी-कभी अचानक पर्वत को घने बादल घेर लेते हैं । पर्वत अदृश्य हो जाता है । तब लगता है जो पर्वत कुछ पल पूर्व हमारी आँखों के सामने था ,वह अचानक बादलों के पंख लगाकर उड़ गया है । यही नहीं ,पर्वत पर बहते झरने ,शाल के वृक्ष आदि भी अदृश्य हो जाते हैं।
प्रश्न ३.`पर्वत प्रदेश में पावस `कविता का प्रतिपाद्य लगभग ६०-७० शब्दों में लिखिए ।
उत्तर:`पर्वत प्रदेश में पावस `के कवि सुमित्रानंदन पंत न केवल पाठकों को पावस ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के सौंदर्य से परिचित कराना चाहते हैं ,बल्कि इस सौंदर्य को परखने और सराहने की भावना का भी विकास करना चाहते हैं । पहाड़ों की अपार श्रृंखला ,पहाड़ों पर बहते झरनें ,पेड़ों का चुपचाप आकाश को ताकना ,बादलों के पंख लगाकर पहाड़ों का उड़ जाना ,शाल के पेड़ों का धरती में धंस जाना आदि दृश्य यह अनुभूति देते हैं किहमारे आस पास की दीवारें कहीं विलीन हो गई हैं और हम अभी-अभी पर्वतीय अंचल में विचरण करके लौटे हैं । प्रकृति का अति सुन्दर मानवीकरण किया गया है ।

दत्त कार्य
सपनों के -से दिन

प्रश्न १ .पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :`सपनों के से दिन `पाठ के आधार पर पीटी सर की निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान होता है--

(१) अनाकर्षक व्यक्तित्व--पीटी सर ठिगने कद के दुबले -पतले परन्तु गठीले शरीर वाले अध्यापक थे ,जिनके चेहरे पर चेचक के खूब सारे दाग थे ।उन्हें किसी ने हँसते हुए नहीं देखा था

(२)कठोर अनुशासनप्रियता --पीटी सर में इतनी अनुशासनप्रियता थी किअनुशासन बनाएरखने के लिए वे बच्चों को भयभीत रखते थे और शारीरिक दंड भी देते थे ।

(३)कुशल प्रशिक्षक -पीटी सर स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण देते थे ।जब वे छात्रों के हाथों के लाल -पीली झंडिआं थमाकर ऊपर-नीचे कराते तो बच्चे बिना गलती किये उनके निर्देशों का पालन करते ।

(४)पक्षीप्रेमी-पीटी सर पक्षी प्रेमी थे ।वे अपने घर पर पाले गए तोतों को भीगे बादाम कि छिली हुई गिरियां खिलाया करते थे । वास्तव में पीटी सर की छवि एक शुष्क और डरावने अध्यापक की थी ।

प्रश्न २.प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल -कूद में ज़्यादा रूचिलेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं ।बताइए-

(क) खेल आप के लिए क्यों ज़रूरी हैं ?

(ख) आप कौन-से ऐसे नियम -कायदों को अपनाएंगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो ?

उत्तर : (क)खेल बच्चों के शारीरिक विकास के लिए उतना ही आवश्यक है ,जितनाकि मानसिक विकास के लिए शिक्षा ।खेल हर बच्चे के लिए बहुत आवश्यक होते हैं ।इससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास दोनों ही होते हैं ।खेलों से बच्चों का सामाजिकविकास होता है ।उनसे सामूहिकता ,सहभागिता मिलजुल कर काम करने की भावना विकसित होती है।खेलों से बच्चा हार -जीत के माध्यम से सुख -दुःख सामान भाव से ग्रहण करता है।इससे बच्चे में प्रतिस्पर्धा में आगे रहने की कला विकसित होती है ।आज खेल यश,प्रतिष्ठा ,अच्छी नौकरी और उच्च आय अर्जन के साधन बन चुके हैं ।

(ख) अभिभावक खेलकूद को बच्चों के लिए अच्छा नहीं समझते हैं ।वे इसे पढ़ाई में बाधक मानते हुए समय बर्बाद करने का साधन मानते हैं ।अभिभावकों को मेरे खेल पर आपत्ति न हो इसके लिए मैं---

(१) खेलकूद और पढ़ाई में संतुलन बनाऊंगा ।

(२)पढ़ाई और गृहकार्य के बाद खेलकूद करूंगा ।

(३) स्कूल से अधिक कार्य मिलने पर मैं उस दिन नहीं खेलूंगा । इसकी भरपाई के लिए मैं छुट्टी वाले दिन खेलकर लूंगा ।

(४)अभिभावकों को खेलकूद की उपयोगिता एवं महत्ता समझाऊंगा ।

दत्त कार्य

मीरा के पद

प्रश्न १. मीरा बाई की भक्ति की क्या विशेषताएं हैं ?
उत्तर : मीरा बाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त है ।वे श्री कृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में देखती हैं। उनके लिए सर्वस्व समर्पण की भावना उनके हृदय में विद्यमान है। अपनी भक्ति में घर -बार सब कुछ त्याग कर श्री कृष्ण की भक्ति के गीत गाने व् नृत्य में समय व्यतीत करने की आकांक्षी है ।मीरा बाई की भक्ति में दास्य भाव की प्रबलता है ,जो उनके सेवा-भाव को प्रकाशित करता है।

प्रश्न २ .मीरा के पदों में द्वितीय पद का प्रीतिपाद्य लिखिए ।
उत्तर :द्वितीय पद में मीराबाई श्री कृष्ण के सानिध्य का लाभ उठाने की आकांक्षी है। उनके अंदर अपने प्रभु के प्रति दास्य भाव अत्यंत प्रबल है ।इस दास्य भाव के माध्यम से वे दिन -रात प्रभु के दर्शन पाने में समर्थ हो पाती हैं ।मीरा बाई ने इस पद में श्री कृष्ण के रूप-सौंदर्य का भी वर्णन किया है।

प्रश्न 3.भगवान को नरहरि का रूप क्यों धारण करना पड़ा ?
उत्तर : हिरणकश्यप नामक एक अत्याचारी एवं अभिमानी राजा था ।वह स्वयं को ही ईश्वर मानता था ;परन्तु उसका पुत्र ईश्वर का परम् भक्त था। हिरणकश्यप ने प्रहलाद को तरह -तरह से समझाया कि वह प्रभु -भक्ति को छोड़कर उसे (हिरणकश्यप) ही भगवान माने पर प्रहलाद तैयार न हुआ ।उसके पिता ने उस तरह -तरह की यातना दी पर प्रहलाद का विश्वास प्रभु में बढ़ता ही गया। एक बार जब प्रहलाद की जान लेनी चाही तो भगवान ने नरसिंह का अवतार धारण कर प्रहलाद की रक्षा की और हिरणकश्यप को मार डाला।

प्रश्न ४.`तीनूं बाताँ सरसी `के माध्यम से मीराबाई क्या कहना चाहती है ? उसकी यह मनोकामना कैसे पूरी हुई ?
उत्तर : मीरा बाई अपने प्रभु श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थी। वह श्रीकृष्ण की चाकरी करके उनका सामीप्य पाना चाहती थी ।इस चाकरी से उन्हें अपने प्रभु के दर्शन मिल जाते। उनका नाम स्मरण करने से सिमरन रूपी जेब खर्च मिल जाता और भक्तिरूपी जागीर उन्हें मिल जाती। उन्होंने अपनी इस मनोकामना की पूर्ति कृष्ण की अनन्य और भक्ति के माध्यम से पूरी की।

प्रश्न ५. मीरा ने अपने प्रभु से क्या प्रार्थना की है ?
उत्तर :मीरा ने अपने प्रभु श्री कृष्ण से लोगों की पीड़ा दूर करने की प्रार्थना की है ।उनके प्रभु श्री कृष्ण ने द्रोपदी ,प्रहलाद और गजराज की जिस तरह सहायता की थी और उन्हें विपदा से मुक्ति दिलाई उसी तरह मीरा अपनी पीड़ा दूर करने की प्रार्थना अपने प्रभु से की है।

दत्त कार्य

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र

प्रश्न १. `तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र  ` पाठ में राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय किसे दिया गया और क्यों?
उत्तर: राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय शैलेन्द्र को जाता है जो फिल्मों की चकाचौंध,धन की लिप्सा आदि से कोसों दूर थे ।उनको आत्मसंतुष्टि प्रिय थी। `सादा जीवन उच्च विचार `की उक्ति उनके ऊपर सटीक बैठती है । उन्होंनेही राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए तथा हीरामन की आत्मा में राजकुमार को इस तरह से उतार दिया कि राजकपूर राजकपूर हीरामन में ही आत्मसात हो गए थे ।यह सब कुछ शैलेन्द्र ने बड़ी कुशलता तथा सौंदर्यपूर्ण ढंग से किया है।

प्रश्न २. एक निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझ-बूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जाते हैं। फिर भी शैलेन्द्र ने फिल्म क्यों बनाई ? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।
उत्तर :एक फिल्म निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझ -बूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जातें हैं क्योंकि उन्हें बहुत सोच समझ कर फिल्म का निर्माण करना पड़ता है । उनका उदेश्य `लाभ कमाना`होता है ।`धन-लिप्सा` ही उनकी मनोवृत्ति होती है । शैलेन्द्र ने `आत्म-संतुष्टि` व `सुख`के लिए फिल्म का निर्माण किया था ।व्यावसायिक सूझ-बूझ वाले लोग पैसा कमाने के लिए सस्ती लोकप्रियता के तत्वों को कोई महत्त्व नहीं दिया ।शैलेन्द्र अच्छी फिल्म बनाने की कला तो जानते थे ,किन्तु वे जनता को लुभाने के लिए अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करना चाहते थे । यद्यपि फिल्म -निर्माता के रूप में शैलेन्द्र सर्वथा अयोग्य थे ,फिर भी उन्होंने `आत्मिक-संतुष्टि ` व `आत्मिक-सुख`के लिए फिल्म का निर्माण किया ।

प्रश्न ३.`तीसरी कसम`फिल्म की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
उत्तर:`तीसरी कसम`फिल्म सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी ।इस फिल्म की कहानी एक मार्मिक कविता के सामान है । इस फिल्म में मूल साहित्यिक रचना को उसी रूप में प्रस्तुत किया गया । इस फिल्म के गीत बहुत लोकप्रिय हुए ।इसके गीत दुरूह नहीं थे ।ये सभी गीत सहज व भाव -प्रवण थे ,वे संदेशप्रद थे ।इस फिल्म में राजकपूर व वहीदा रहमान जैसे महान कलाकारों ने अभिनय किया है ।इस फिल्म तथा गीतों को शंकर -जयकिशन जैसे महान सगीतकार ने सगीत दिया जो फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व ही अत्यंत लोकप्रिय हो गए ।`तीसरी कसम` फिल्म में अन्य फिल्मों की तरह चकाचौंध के बजाए ,सहज लोकशैली को अपनाया गया ।इस फिल्म ने अपने गीत -संगीत ,कहानी आदि के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की । इस फिल्म में अपने जमाने के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने अपने जीवन का सबसे बेहतरीन अभिनय कर सबको हैरान कर दिया ।इस फिल्म को अनेक अंतर्राष्ट्रीय पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया ।यह फिल्म ज़िंदगी से जुडी हुई है ।फ़िल्मी सफर में इसे मील का पत्थर मना गया है ।आज भी इस फिल्म की गणना हिंदी की अमर फिल्मों में की जाती है ।